International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 320-321

काव्यशास्त्र में सौंदर्य बोध एवं रमणीयता

डॉ0 शिप्रा पारीक
व्याख्याता, संस्कृत, एस.एस. जैन सुबोध स्नातकोत्तर (स्वायत्तशासी) महाविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत।

प्रस्तावना

''कवेः कर्म काव्यम्'' कवि का कर्म ही काव्य है। कवि शब्द ''कुङ'' शब्द धातु 'इ' प्रत्यय लगाने से बनता है। आचार्य मम्मट के अनुसार काव्य होता है –

''लोकोत्तरवर्णनानिपुणकविकर्म काव्यं।''

– मम्मट काव्यप्रकाश

इसलिये ''कवयः क्रान्तदर्शिनः'' अर्थात् कवि क्रान्तदर्शी भी होता है, उसे वस्तु के अन्तर्निहित तत्व का ज्ञान होता है। अर्थात् जिससे वह काव्य में सौन्दर्य उत्पन्न करता है।

काव्य के राग–दोषों के विचार के लिये जो शास्त्र प्रवर्तित हुआ, उसका नाम अलंकार शास्त्र पड़ा। वस्तुतः इस शास्त्र में अलंकार शब्द का प्रयोग बहुत ही असीमित अर्थ में हुआ है जिसकी व्युत्पत्ति है – ''अलंक्रियते इति अलंकारः'' अर्थात् काव्य का सौन्दर्य। काव्य में सौन्दर्य उत्पन्न करने वाला अथवा जो काव्य का सौन्दर्य है, उसकी विवेचना करने वाला शास्त्र अलंकार शास्त्र अथवा सौन्दर्य–शास्त्र है।

काव्य का यह सौन्दर्य शब्द, अर्थ, शब्दालंकार, अर्थालंकार, गुण, रीति, वृत्ति, रस इन सभी का समष्टिभूत तत्त्व है। इसलिये कहा गया है –

''काव्यस्य शब्दार्थौ शरीरं, रसादिश्चात्मा, गुणाः शौर्यादिवत् दोषाः काणत्वादिवत्, रीतयोऽवयवसंस्थानविशेषवत्, अलंकारा कटक कुण्डलादिवत्।''

– (साहित्यदर्पण/प्रथम परिच्छेद)

काव्यशास्त्र में सौन्दर्य वस्तुतः सहृदय का आत्मधर्म है। इसलिये पण्डित राजजगन्नाथ ने काव्य का लक्षण बनाया ''रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्'' अर्थात् जिस शब्द से रमणीय अर्थ का बोध हो, वह शब्द काव्य है।

रमणीयता के विषय में माघ ने अपने शिशुपालवध काव्य में वर्णन किया है कि रमणीयता प्रतिक्षण अपना नवीन रूप प्रकाशित करती है।

''क्षणे–क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः''

– (शिशुपालवध)

रमणीयता जो कि काव्य का शाश्वत सौन्दर्य है, वह शाश्वत आनन्द भी प्रदान करती है, इसी के कारण कृतियाँ कालजयी बनती है। जब अपूर्व वस्तु निर्माण समर्थ प्रतिभा सम्पन्न कवि अपने वर्णनों से सहृदयों के हृदय को आप्लावित करता है तो लोकोत्तर आनन्द से उनकी चेतना का विस्तार करता है। इसलिये कहा है –

''रमणीयता च लोकोत्तराह्लादजनक ज्ञानगोचरता।''

– (रसगंगाधर/प्र.आनन)

अर्थात् लोकोत्तर आनन्द को उत्पन्न करने वाले ज्ञान का बोध ही रमणीयता है।

रमणीयता में निहित आह्लाद की लोकोत्तरता उसमें स्थित चमत्कार तत्त्व के कारण आती है, यदि यह चमत्कारत्व नहीं हो तो काव्य में कोई भी उन्मुख नहीं होगा। यही काव्य का सौन्दर्य है एवं यही काव्य का रस तत्त्व है।

रस में चमत्कार ही सारतत्व है जो सभी के द्वारा अनुभव किया जाता है और इसके सार तत्व होने के कारण सभी जगह अद्भुत रस हो सकता है।

''रसे सारश्चमत्कारः सर्वत्राप्यनुभूयते।
तत्चमत्कार सारत्वे सर्वत्राप्यद्भुतोरसम्।।''

– (साहित्य दर्पण/प्र. परिच्छेद)

यह चमत्कारत्व ही आनन्दवर्धन की दृष्टि में ध्वनि है। उन्होंने उसे अतिरमणीय बताया है। जैसा कि ''तस्य हि ध्वनेः स्वरूपं सकल सत्कवि काव्योपनिषद् भूतं अतिरमणीयं, अणीयसिभिरपि चिरन्तन काव्यलक्षण विधायिना बुद्धिभिरनुन्मीलितपूर्वं।'' अर्थात् वह ध्वनि स्वरूप सभी सत्कवियों के काव्यों का परमरहस्यभूत अत्यधिक सुन्दर, प्राचीन काव्य–लक्षणकारों की सूक्ष्म बुद्धि से भी प्रस्फुटित नहीं हुआ, जिसे आनन्दवर्धन प्रतीयमानार्थ भी कहते हैं। काव्य का चमत्कारत्व यही रमणीयता महाकवियों की वाणी में एक अद्भुत रूप से प्रतीत होने वाला सौन्दर्य है जो कि स्त्रियों में अधर–नासिका–कपोल इत्यादि अंगों से अतिरिक्त रूप में जिस प्रकार लावण्य की प्रतीति होती है, वैसा ही है।

प्रतीयमानं पुनरन्यदेव वस्त्वस्ति वाणीषु महाकवीनाम्।
यत्तत्त प्रसिद्धावयवातिरिक्तं विभाति लावण्यमिवांगनासु।।

– (ध्वन्यालोक/प्रथमोद्योत)

काव्य में प्रतीति स्वरूप लावण्य ही रस है जिसके कारण पहले प्रतीति स्वरूप देखी गई वस्तुयें भी नवीन लगती है। जैसे ध्वन्यालोक में कहा है –

''दृष्टपूर्वा अपि ह्यर्थाः काव्ये रसपरिग्रहात् सर्वे नवा इवाभान्ति मधुमास इव द्रुमाः''

– (ध्वन्यालोक)

रस को व्यापक ब्रह्म रस के चमत्कार एवं लोकोत्तरता के कारण ही वेद में माना है –

"रसो वै सः रसोध्यवायं लब्ध्वा आनन्दी भवन्ति"

– (तैत्तरीयोपनिषद्)

अर्थात् वह परम ब्रह्म रस रूप है, रस को ही पाकर संसार का प्राणी आनन्दित होता है। जिस प्रकार वह परम ब्रह्म लोकोत्तर होता है, उसी प्रकार काव्य में गृहीत पदार्थ भी लोकोत्तर बनकर आनन्ददायक हो जाता है और रस बन जाते हैं। यह काव्य रस ही आनन्द है, इसीलिये आचार्य मम्मट ने अपने काव्य प्रकाश ग्रन्थ में इसे काव्य के सभी प्रयोजनों में मूलभूत प्रयोजन स्वीकार किया है।

सकल प्रयोजनमौलिभूतं समनन्तरमेव रसास्वादन समुद्भूतं विगलित वेधान्तरमानन्दं।

–(काव्यप्रकाश/प्रथमोत्तास)

कवि की नवीन एवं लोकोत्तर सृष्टि विस्मयकारक होकर परमानन्द की अभिव्यक्ति करती है। रमणीयता हमारी चेतना को लौकिक बन्धनों से मुक्त कर असीमित व लोकोत्तर बनाती है। तभी तो कवि कालीदास की शकुन्तला लोकोत्तर है।

अभिज्ञान शाकुन्तलम् में राजा दुष्यन्त के अनुसूया ने शकुन्तला को देवी अप्सरा, मेनका की पुत्री बताया, तब राजा ने इसकी पुष्टि में यह कहा कि ''शकुन्तला सचमुच अप्सरा की कन्या है, नहीं तो मनुष्यों में ऐसा रूप कहां मिल पाता है क्योंकि चंचल चमक वाली बिजली पृथ्वी तल से थोड़े ही निकला करती है।''

मानषीषु कथं वा स्यादस्य रूपस्य संभवः।
न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्।।

– (अभि.शा. 1/24)

रस चर्वणा से संवलित होकर प्रत्येक पदार्थ लोकोत्तर आनन्द को उत्पन्न करते हैं। शकुन्तला के वल्कल वस्त्रों द्वारा भी सौन्दर्याभिव्यक्ति हो रही है –

''किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्।''

– (अभि./प्र. अंक)

सौंदर्याभिव्यक्ति हमारी उदात्त भावनाओं की परिचायक है, वह हमारे जीवन के लक्ष्यों की अभिव्यंजना है।

महर्षि कण्व द्वारा शकुन्तला को दी जाने वाली गार्हस्थ्य धर्म की शिक्षाओं से अभिव्यंजित आदर्श नारी में सौंदर्याभिव्यक्ति देखिये –

''शुश्रूषस्व गुरुन् कुरुं प्रिय सखी वृत्तिं सपत्नी जने''

– (अभि./प्र.अ.)

इन सबमें सहृदय को शाश्वत रमणीयता का आस्वादन होता है।

इस प्रकार से काव्यशास्त्र के सभी सिद्धान्तों में भी चाहे वह भामह का अलंकार हो या वामन के गुण हो, कुन्तक की वक्रता हो, आनन्दवर्धन की ध्वनि हो, सभी में रमणीयता अनुस्यूत रहकर काव्य की प्रभावोत्पादकता की व्याख्या करती है।

शुश्रूस्व गुरुन कुरु प्रियसारवे वृत्तिं सपत्नीजने।
भर्तुर्विप्रकृताऽपि रोषणतया मा स्म प्रतीपं गमः।
भूमिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येएवनुत्सेकिनी
यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाकुलस्याधयः।।

– (अभि. 4/17)

बड़ों की सेवा करना। सौत के प्रति प्रिय रुखी का सा व्यवहार करना। पति द्वारा तिरस्कृत होकर भी क्रौध के कारण विपरीत मत जाना। सेवकों के प्रति अत्यन्त उदार व सौभाग्य पर अभिमान रहित होना। इस प्रकार करने से युवतियां गृहिणी का पद पाती हैं लेकिन इसमें विपरीत आचरण वाली वंश के लिये मनोव्यथा होती है।